यादे हुसैन तामीरे किरदार का सरचश्मा

मोहतरमा राना रिज़वी

खालिक़े हक़ीक़ी ने दुनिया खल्क़ की—हाल माज़ी में बदलता गया यानी माज़ी के लातादाद नक़शो—निगार आलमे वजूद में आये और फ़ना हो गये लेकिन यह कैसी सदाये हैं जो आलमे बसीरत के उफ़क़ पर बर्कआमेज़ अंदाज़ में आज तक गूंज रहीं हैं। यह कर्बला के तपते हुये सहरा की बाज़गश्त है जिसके सीने में रसूल अकरम मोहम्मद[स०] के नवासे हुसैन[अ०] का दिल धड़कता है।

हाँ, हम हुसैन (अ०) को इसीलिये याद करते है। कि हमारे ज़मीर रौशन रहें, हमारे मिज़ाज आदिलाना सिफ़ात के मरक़ज़ बने रहें, हमारी रूहों में बेदारी और हमआँहगी की हरारत रहे हमारे किरदार में मसावात, इंसानी हमदर्दी और मोहब्बत के शरारे फूटते रहें, और अपने खालिक़े हक़ीक़ी के सामने जब भी सर व सुजूद हों तो ज़बान की नोक से रटे रटाये सबक़ की तरह उसकी नमाज़ न अदा करें, बल्कि रूह की तमाम कैफ़ियाती बलंदियों को समेट कर अपने वुजूद को फरामोश कर दें।

यही है किरदार की वह बलन्दियाँ और मेराज, जो आसमान के लामहदूद वसतों में नहीं, बल्कि करबला के रेगज़ारों में अपनी तजल्ली को बिखेरे हैं। किरदार, जो बनी—ए—नौ—ए—इंसान की फ़लाह और बहबूद के साथ—साथ एक दायमी और पुरनूर हयात का ज़ामिन होता है उसका सरचश्मा हुसैन ही की ज़ात है।

लेकिन हम आज इल्म और तमद्दुन के जिस गहवारे में परवरिश पा रहे हैं उस से हम और हमारे मआशरे को जो कुछ भी मिला है क्या हम उससे वाक़ई मुतमइन हैं ? अपने ज़मीर की रोशनी में मोआयना करने वाला हर दिल एक सर्द आह भर कर रह जायेगा।

हम एक अच्छे डाक्टर बन सकते हैं, एक अच्छे इंजीनियर बन सकते हैं, एक चोटी के वकील बन सकते हैं——बस क्या यही हैं हमारे इल्म की मंज़िल—लेकिन अगर हम किरदार की तमाम बलन्दियों को अपने साथ रखें तो यही डाक्टरी मसीहाई उन्सुर रखती है यही इंजीनियररिंग और टेक्नोलोजी औजे सुरैया तक पहुचने का दम ख़म रखती है यही वकालत हक़—सदाक़त के लिये अपनी ज़बान खोलती है लेकिन हम तो किरदार की बलन्दियों से दूर है—क्यों इल्म और तमद्दुन का वह कौन सा रूप है जिसका तस्ववुर इतना भयानक है— शायद यह है कि इल्म को सिर्फ इस माद्दी दुनिया की खातिर हासिल करते हैं जो फ़ना हो जाने वाली है लेकिन जब इल्म बक़ा के लिये हासिल किया जाता है तो उसके लिये किरदार की ज़रूरत होती है लेकिन हम तो हर आसान काम के आदी हो गये हैं। किरदार निगारी में तो थोड़ी मेहनत करनी पड़ती है ज़फाकशी, दुख और कर्ब के वीरानों से गुज़रना पड़ता है सब्र और इस्तेक़लाल के लामहदूद मरहलों का सामना करना पड़ता है ईसार, वफ़ा, मोहब्बत, इंसानी हमदर्दी, नियत की पाकीज़गी और ग़ैरतो हममियत का लबादा ओढ़ना पड़ता है लेकिन हमारी आदत तो हल्के फुल्के लिबास पहनने की हो गई है। हमारा जिस्म कहां उस बोझ का मुताहम्मिल है जो किरदार का लिबास बर्दाशत कर सके।

हमें अपने जिस्म को मज़बूत बनाना है वह भी सिर्फ जिस्मानी ताक़त से नहीं बल्कि रूहानी ताक़त से भी ताकि अगर हमारा जिस्म छः माह के बच्चे की मानिन्द कमज़ोर भी हो तो अपनी रूहानी ताक़त के ज़ोर से अपने दौर के सबसे बड़े तीरन्दाज़ को भी लरज़ावरन्दाम कर दें, और यही ताक़त हमको अपने किरदार के

तिरयाक़ से हासिल होनी है। ऐसी कैफ़ियात का मुशाहदा निगाहें नहीं कर पातीं लेकिन तारीख ने अपने दामन में ऐसी दास्तानें समेट कर अपने वजूद पर रश्क किया है–तो आइये, हम तारीख की कोख से उस अनमोल गौहर की तलाश करें, जो किरदार साज़ी के अर्श पर एक ऐसे आफ़ताब की मानिन्द चमकता हो जिसकी तजल्ली को देखकर बनी–नौए–आदम की रूह कुछ इस तरह सरगोशी करने लगे :

"इंसान को बेदार तो हो लेने दो,
हर क़ौम पुकारेगी हमारे हैं हुसैन"

यही है वह नाम जिसके किरदार ने एक ऐसी रोशनी अताकी जो दायमी है और जिसके किरदार के आबशार से फूटते हुये उन्सुर ने खुदाई वजूद और उसके लाएह–ए– अमल को जिला बख्शी।

अगर हम हुसैन इब्ने अली की शख़सीयत और उनकी तारीखी पेशक़दमियों पर तफ़क्कुर करते हैं तो हम पाते हैं कि उनकी हर–हर सांस बनी नौ इंसान के लिये हयात बख्श और एक ऐसा हाशिया खीचती है जो हक़ की तजल्लियों और बातिल के अंधेरों को जुदा करती है।

कर्बला की संगलाख वादियों में जिस खून के तूफ़ान का नज़राना हुसैन (अ0) ने अल्लाह की राह में पेश किया, बनी नौ इंसान का एक ऐसा कारनामा है जिस पर तफ़क्कुर के तमाम मैदान शज़दर और अंगुशबदन्दा नज़र आते हैं।

रसूले अकरम के बाद जब इस्लाम के रूहानी सरापा में माद्दी दुनियां के इमराज़ सराअत कर गये और इसकी नबज़े डूबने लगी तो हुसैन ने एक हाज़िक़ तबीब के मानिंद मर्ज़ को पहचाना और यह महसूस किया कि इस्लाम के सिसकते हुये जिस्म में खून की 72 बोतलों की ज़रूरत है, मैदाने अमल में आये।

नबज़े इस्लाम में दौड़ा दिया खूने ताज़ा
ऐसे होते हैं मोहम्मद के घराने वाले ।

हुसैन बहैसियत एक इन्सान के, जिसके किरदार में वह तमाम चीज़े जमा थीं जो एक इन्साने कामिल के लिये ज़रूरी होती है, उठे तफ्फ़कुर किया माहौल का जायज़ा लिया, मुख्तसर तारीख के पेचो खम पर एक बारीक नज़र डाली, माशरे की बदहाली की वजहों को तलाश किया, इस्लाम के खिरमने अमन में आग लगा देने वाली वो कौन सी कैफ़ियत है, उसका मुआयना किया तो मालूम हुआ क़ौम वही है, लोग वही हैं, दीन वही है, लेकिन इनमें कुव्वते एहसास मर चुका है, जुरंते इज़हार सल्ब हो चुका है और यही दो किरदार, जो हयात का लाहे अमल होते हैं उनको वापस लाना था।

इस किरदार साज़ी की खास वजह सिर्फ़ एक ऐसी राह को हमवार करना था जो दायमी हयात की ज़ामिन हो और उसे अमली जामा पिन्हाने के लिये हुसैन ने कर्बला का रूख किया।

किरदार साज़ी के पहले मरहले पर हुर के प्यासे लशकर को, जो हुसैन[अ0] को गिरफ्तार करके मौत के घाट उतारने आया था, पानी फराहम किया, जो क़त्ल करने आया था उसे ज़िन्दगी बखशी। किरदार की इस मेराज पर कायनात की तमाम हकीमाना और रूहानी बलाग़तें निछावर हैं।

अगले मरहले पर, दुशमन की तरफ़ से फ़ुरात से खेमे हटाये जाने का सवाल उठा, हुसैन (अ0) के साथी ज़ुहैर इब्ने कैन बिफ़रे–लेकिन हुसैन (अ0) ने फ़लसफ–ए–अमन पर एक तारीख़ी जुमला कहा–"मैं जंग में पहल नहीं चाहता"

शबे आशूरा हुसैन ने शमा गुल करके अपने असहाब पर से बैयत उठा कर उन्हें आज़ाद किया लेकिन वह शमा जिससे नूरे इलाही की किरने फूट रही हों उसे छोड़कर उसके परवाने कहाँ जाते, यह है किरदारे हुसैनी का रूहानी विक़ार।

तारीखे करबला गवाह है कि हुसैन अपने ग़ुलाम जौन की आवाज़ पर उसी बेचैनी और र्कब के साथ गए जिस तरह अपने जवान बेटे अली अकबर की आवाज़ पर, यह था मसावात का एक अज़ीम दरस।

शेष पेज नं0 33 पर.....

''दुश्मनों की प्यास बुझवाओ तो लो नाम हुसैन।
मौत की छाती पा चढ़ जाओ, तो लो नाम हुसैन।
दोस्त दारे दुश्मनाँ हो लो , तो लो नाम हुसैन।
तेग़ के नीचे भी सच बोलो, तो लो नाम हुसैन।
जुल्म की तामीर को ढा दो, तो लो नाम हुसैन।
शम्मा से आंधी को चकरा दो, तो लो नाम हुसैन।
हां परख लो खूब हिम्मत को, तो लो नाम हुसैन।
जांच लो अपनी शराफ़त को, तो लो नाम हुसैन।''

दुश्मनों के साथ कैसा सुलूक किया जाता है, यह हुसैन से सीखो। गुलामों और कनीज़ो के साथ कैसे पेश आया जाता हैं, यह हुसैन से सीखो। राहे हक़ के लिए अपना सब कुछ कैसे लुटा दिया जाता है, यह हुसैन से सीखो। यतीमों और बेवाओं के सिर पर कैसे हाथ रखा जाता हैं यह हुसैन से सीखो। हर बड़ी से बड़ी मुसीबत का कैसे हंस के सामना किया जाता है यह हुसैन से सीखो। अपने गोद के पालों को प्यास में बिलखता देखकर भी कैसे सब्र किया जाता है, यह हुसैन से सीखो। सब कुछ निछावर करके मर्ज़िये इलाही जानना, यह हुसैन से सीखो। दुश्मनों की इशतियाल अंगेज़ हरकतों के बावजूद भी जंग में पहल न करना, यह हुसैन से सीखो। ज़ुल्म न करने और ज़ुल्म न सहने की आदत डालना, यह हुसैन से सीखो। बड़े से बड़े इम्तहान में भी हक़ को न छोड़ना, यह हुसैन से सीखो। यादे हुसैन क्यों ज़रूरी है ? क्योंकि, जब हुसैन का नाम ज़हन में आयेगा तो किरदारे हुसैन ज़हन में आयेगा और जब किरदारे हुसैन ज़हन में आयेगा तो किरदारे यज़ीद सामने आयेगा। जब किरदारे हुसैन से बामारफ़त मुहब्बत होगी तो किरदारे यज़ीद से बामारफ़त नफ़रत होगी। बस तभी, इन्सान के किरदार से बुराइयां दूर हो जायेंगी। क्यों कि किरदारे यज़ीद दुनिया की तमाम बुराइयों का एक पुलिन्दा है।

बामारफ़त यादे हुसैन से मुन्सलिक होने का असर आज की दुनिया में देखना हो तो देखिए, कि किस तरह या हुसैन कहकर किरदारे हुसैनी पर अमल करने वाला ईरान, बातिल परस्त ज़ालिम और यज़ीदी हुकूमतों और शैतानी Superpowers से टकराया हुआ है। न रूस से मदद लेता, न अमरीका से मदद लेता। क्यों ? क्योंकि हुसैन ने अपने वक्त की दोनों Superpowers यानि यज़ीदी हुकूमत और रूमी हुकूमत को ठोकर मार दी थी और या हुसैन को बिद्अत कहने वाली बदकार अरबी हुकूमतें किस तरह फिलिस्तिनियों को अकेला छोड़कर इसराईल के सामने से फ़रार अख्तयार किये हुए हैं।

अगर बातिल को कुचलना है, हक़ की राह पर चलना है, मुसीबतों के वक्त में भी हिम्मत और सब्र का दामन नहीं छोड़ना है या यूँ कहूँ, कि दुनिया को जन्नत बनाना है तो सरदारे जवाँनाने जन्नत इमामे हुसैन की याद को ताज़ा करके उनके किरदार के नक्श पर अमल करना पड़ेगा, वरना किरदार की पस्ती की यह सूरत और भी बद्तरीन होती जायेगी और दुनिया जहन्नुम से भी बद्तर हो जायेगी।

दावत है तमाम बनीनौए-इन्सानी को चाहे वह इस वक्त भी बातिल के साथ क्यों न हो, के आजाओ और इमामे हुसैन अ० से बामारफ़त मुहब्बत करके उनकी याद मनाकर उनके किरदार को नमून-ए-अमल बनाकर अपनी ज़िन्दगी संवार लो और हुर बन जाओ।

पेज नं0 29 का शेष.....................

जंग पर जाते वक्त अगर अपनी मां–जाई बहन ज़ैनब से रूखसत हुये तो माँ की कनीज़ फिज़्ज़ा को आखरी सलाम किया। यह है अख्लाक़ की वह बलन्दी जो किरदारे हुसैन से मिल रही है।

करबला के समुन्दर में किरदार की ऐसी लातादाद मौजे हैं लेकिन हुसैन के किरदार ने जिस अज़ीम शैय का इन्केशाफ़ किया वह यह थी कि ऐ बनी–नौ–ए–इंसान तुम्हारा वजूद कभी फ़ना होने वाला नहीं ! अगर तुम्हारा किरदार क़ानूने इलाही की पैरवी और बातिलाना इकदाम के ख़िलाफ आवाज़ बलन्द कर देने वाले हौसले रखता है तो तुम हमेशा हमेशा की हयात के हक़दार होगे। वरना मौत तुम्हारी ज़िन्दगी का दूसरा नाम है जिससे तुम कभी छुटकारा न पा सकोगे।

इसी लिये किरदार का वह चशमा जो करबला की खुश्क और रेतीली सरज़मीन पर बहा था, दुनियाये इन्सानियत के लिये हयात बनकर छा गया जिसकी याद से हम आज भी सरशार हैं और अपने किरदार की तमाम बलन्दियों पर पहुंचते हैं।